प्रस्तावना।

प्रत्येक पुत्रीके लिये विवाह (लग्न) होनेपर प्रथमवार ससुराल जाते समय माताको क्या २ उपदेश देना चाहिये इस विषयकी 'पुत्रीने मानी शिखामण' नामकी एक छोटीसी पुस्तक अहमदाबाद निवासी वैद्य जटाशंकर लीलाधर त्रिवेदी द्वारा हजारोंकी संख्यामें प्रकट हुई थी, जिसको देखकर एक परोपकारिणी जैन महिलाने पुत्रियोंको अति उपयोगी जानकर इसका हिन्दी अनुवाद श्रीयुत वर्णी दीपचन्द्रजी परवार नरसिंहपुर निवासी द्वारा करवाके हमारे द्वारा वीर सं. २४३९में विनामूल्य प्रकट कराया था. वर्णीजीने इसमें हिन्दी कविता तथा और भी बहुत सी उपयोगी बातें बढ़ा कर इसको विशेष हितकारक बना दिया है, इसीसे शीघ्र ही इसकी दूसरी तीसरी और चौथी आवृत्तियां भी जो हमने प्रकट की थीं, [illegible] पांचवी आवृत्ति प्रकट की जाती है। हरएक पुत्रीके लग्नप्रसंगपर ऐसी पुस्तककी कुछ न कुछ प्रतियां मंगवा कर अवश्य बांटने योग्य है, जिससे अपनी पुत्रियों अर्थात् भविष्यकी माताओंके वर्तनमें अनेक प्रकारके लाभ होना संभव है। यह पुस्तक ७८ पृष्ठकी हो जानेपर भी इसका प्रचार बहुतायतसे हो इस लिये इसका मूल्य सिर्फ तीन आना ही रखा है और विवाहादि प्रसंगों पर बांटनेके लिये तो इससे भी कम अर्थात् १२) सैकड़ाके हिसाबसे भेजी जायगी। अपनी पुत्रीके लग्नप्रसंगपर हरएक मातापिताको इस उपयोगी पुस्तककी १००-२०० प्रतियाँ मंगाकर अवश्य बांटने के लिये हम एकवार और आग्रह करते हैं और यही चाहते हैं कि ऐसी पुस्तकका प्रचार लाखोंकी संख्यामें हो कर हमारी पुत्रियोंका हित हो। इत्यलम्।

जैनजातिसेवक—

वीर सं. २४५२] मूलचन्द किसनदास कापड़िया

पुत्रीको माताका उपदेश।

(ससुराल जाते समय)

सन्मति पद सन्मति करण वंदू शीष नमाय।
जा प्रसाद शिक्षा लिखूं पुत्रिन को सुखदाय ॥१॥

(१) व्याह होने पर प्रथम वार जब पुत्रीको अपने पिताके घरसे ससुरालमें जानेका समय आया, अर्थात् विदाका समय हुआ, तब माताने पुत्रीको सम्पूर्ण वस्त्राभूषण पहिराकर गालकों रोलीका तिलक लगाया और नवीन फल ओली गोदी में देकर कहा– 'बेटी, अपने हाथ पेर आदिका सम्पूर्ण आभूषण सम्हालो और सुखपूर्वक जावो।'

(२) माताके ये वचन सुनकर पुत्री लज्जा सहित बोली– "हे माता! में जाती हूं, मेरी याद मत भूलना।" इतना ही कहने पाई थी कि उसका गला भर आया और आंखोंसे आंसू टपकने लगे। वह इससे आगे और कुछ भी नहीं कह सकी, किन्तु मन्द स्वरसे माता पितादि स्वजनोंके प्रेमसे अधीर होकर रोने लगी। ठीक है, जिस माताकी गोदमें लालन पालन पाकर वह इतनी बड़ी हुई है, उस मातासे एकाएक प्रेम छूट जाना सहज नहीं है! और माता, जिसने नव मास तक गर्भमें धारण

करके जन्म दिया और तबसे अपने अंचलका दुग्धपान कराकर अब तक अनेक प्रकार लालन पालन किया है, उसका भी प्रेम पुत्रीसे क्या एकदम छूट सक्ता है ? परन्तु यह अनादिकी प्रथा है कि पुत्रसे अपना और पुत्रीसे पराया वंश चलता है। अर्थात् पुत्री पर घरके लिये ही उत्पन्न हुई है, इसमें हर्ष विषाद ही क्यों करना चाहिये ? यह विचार कर माता पुत्रीके मस्तकपर हाथ रखकर प्रेमाश्रु टपकाती और अपने अंचलके छोड़से पुत्रीके आंसू पोंछती हुई मधुर और गदगद् स्वरसे बोली:-

(३-४) "मेरी प्यारी बेटी ! तू अपने मनमें किंचित् भी खेद मत कर और हर्षित होकर जा। अब विलम्ब मत कर, मैं तुझे शीघ्र ही रक्षाबंधन के पवित्र पर्व पर बुला लूंगी। उठ! आंसू पोंछ, मनमें कुछ भी चिंता मत कर। तेरी सासुजी बहुत सरल स्वभाववाली, दयालु और साध्वी स्त्री हैं। संसारमें उसके समान विरली ही स्त्रियां होंगी। तुझे तेरे सौभाग्यसे ही ऐसी सासु मिली है," ऐसा कहती हुई माता, मानो हर्षसे फूली नहीं समाती थी, बोली-"बेटी विजयालक्ष्मी ! तू भाग्यवान है। जा और जिस प्रकार तेरी भक्ति तथा प्रेम मेरे ऊपर है उसी प्रकार अपनी सासु में भक्ति तथा प्रेम रखना और उन्हीं को माता समझकर सदा विनयपूर्वक उनकी सेवा सुश्रूषा व अज्ञा-पालन करते रहना।

(५) बेटी, मैंने तुझे जन्म दिया है और तब से अब तक तेरा लालन पालन किया इस लिये अबतक ही मैं तेरी माताथी,

परन्तु अब जन्म पर्यन्त तो तेरी माता तेरी सासुजी ही हैं। आजसे तेरे लिये जो कुछभी सुख वा दुःख होनहार है, उस सब का भार तेरी सासूजी पर ही हैं। वेही अब तेरो सच्ची माता हैं, ऐसा समझ कर अब तू हम समस्त जनोंका वियोग जनित दुःख भूल जा।

(६) वेटी यद्यपि आजकाल लोकमें यह बुरी कहावत प्रायः चल पड़ी है कि—सासुएं बहुओं को सतानेवालीं, दुर्बुद्धिनीं, और कठिन वचन कहनेवालीं होती हैं, परंतु यह बात सर्वथा कल्पित (मिथ्या) है, क्योंकि जो पुरुष अपने पुत्रोंका व्याह वंशकी रक्षा व सुखवृद्धिके अर्थ करता है, सो भला वह अपनी पुत्र वधुओंको कैसे दुःखी कर सक्ता है? कदापि नहीं, इस लिये तू कभी भी अपने अंतःकरणको ऐसी ऐसी घृणित बातों से मलिन मत होने देना।

(७) वेटी! स्मरण रख कि मीठे नम्र और विनययुक्त वचन बोलनेसे प्रत्युत्तर भी मीठे और नम्र वचनों में ही मिलता है। और कडुवे-कठोर बचनोंका उतर कडुवे व कठोर बचनोंमे। अर्थात् अपनको अपनी ही प्रतिध्वनि (झांई=ECHO) अपने को सुनाई पड़ती है। इस लिये जो तू वहां (ससुरालमें) जाकर विनय और विवेक से वर्ताव करेगी तो तेरी मनोकामनायें पूर्ण होंगीं और जो दूसरोंका दिल दुखावेगी तो उसके बदले तुझे तिरस्कार सहना पड़ेगा।

(८) वेटी सुसरालमें जाकर लाज (मर्यादा) से रहना

और तेरे जो जो कर्तव्य हों, उन्हें भले प्रकार पूरा करना। सर्व साधारणसे हिलमिल कर बर्ताव करना। 'यह देदो, वह ला दो, असुक वस्तु आज ही लूंगी, वा अभी लूंगी, शीघ्र मंगादो' इत्यादि किसी प्रकार कुछ भी हठ मत करना, और न कभी अपने घरकी कोई बात बाहर किसीसे कहना क्योंकि कहा है-"तुलसी पर घर जाय कर, दुःख न कहिये रोय, नाहक भरम गुमायके, दुःख न बांटे कोय॥ क्योंकि इससे घरका भेद खुल जाता है, घरमें कलह बढ़ता है, अपना चित्त सदैव व्याकुल रहता है और लोगोंमें हंसी होती है। भोजनके समय जो कुछ तेरी थालीमें परोसा जाय, उसे रुचिपूर्वक ग्रहण करना, (जीम लेना)। कभी कोई वस्तु किसीसे छुपाकर नहीं खाना, क्योंकि ऐसा करनेसे आचार व धर्म बिगड़ता है और घर में परिपूर्णता नहीं होती।

(९) बेटी! सवेरे सबसे पहिले उठना, और रात्रिको सब के पीछे सोया करना। घरके बासन-बर्तन सदैव मांजकर साफ चमकते हुए रखना, घरको झाड़ बुहार कर सदा स्वच्छ रखना, घर के किसी काम में कभी आलस्य नहीं करना और न कभी घर का काम पूरा हुए बिना कहीं बाहर जाना। निष्प्रयोजन घर-घर डोलना अच्छा नहीं होता है, इसलिये जब घर के धंधे से अवकाश मिले, तो धर्म व नीति के उत्तम ग्रन्थ और प्राचीन सती महिलाओं, जैसे सीता, द्रोपदी, अंजना, राजुल, मैना, मनोरमा आदिके चरित्रोंको पढ़ने में समय बिताना, जिससे समय

भी निकल जावे, मनोरंजन भी हो और आत्माके भाव भी पवित्र होवें नित्य प्रति सोते तथा जागते समय पंच परमेष्ठीका स्मरण किया करना, जिससे सर्व कार्य निर्विघ्नता पूर्वक पूर्ण होवें और सदैव चित्त भी प्रसन्न रहे।

(१०) बेटी! घरके सब काम हर्षपूर्वक किया करना क्योंकि कहा है—" अपने कारजके लिये, खरचत हैं सब दाम। जगत कहावत है भली, काम भलो नहि नाम।" ससुरालके बच्चोंको यदि वे सोना चाहें, तो भले प्रकार उढ़ाना बिछौना करके सुलाना उनको सुलाते, झूलना झुलाते, अथवा थपथपाते समय अच्छे अच्छे बालकोपयोगी गीत गाया करना। यदि वे जागते हों तो उन्हें बहलानेके लिये घर के खेल खिलोने व अन्य वस्तुएं, जिनसे कि बच्चोंको उत्तम शिक्षा मिल सके दिखाना, परन्तु कभी भी बच्चोंको भूत वगैरः का झूठा भय दिखा कर मत डराना, क्योंकि इससे बच्चे डरपोक और कायर बन जाते हैं।

(११–१२) "यह बच्चा हमेशा रोता ही रहता है, यह बड़ा दंगा करनेवाला लड़ाकू है, इसकी नाकमेंसे लींट बहती है, आंखोंमें कीचड़ भरा है, बार २ चोंक उठता है, इसके माथेमें खाड़ा है, यह गोदमें नहीं आता, यह जोर जोरसे चिल्लाता है" इत्यादि कठिन और घृणित शब्द किसी बच्चेको न कहना, न कभी किसी बच्चेको व्यर्थ धमकाना न मारना, न उसपर चिल्लाना, किन्तु मीठे मीठे शब्दोंमें समझा कर उसकी हठ छुड़ाना, क्योंकि
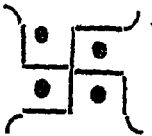
प्रेमसे बच्चे तो क्या देव, मनुष्य, पशु, पक्षी आदि सभी वश हो जाते हैं। कहा भी है:—

मिष्ट वचन है औषधी, कटुक वचन है तीर ॥
श्रवण द्वार ह्वो संचरे, साले सकल शरीर ॥

(१३) इस लिये निम्न प्रकारसे कार्य करना! अपना स्थान, भोजन, वस्त्र, आभूषण, स्वशरीर और बच्चे ये मैले रहनेसे लोकमें निन्दा होती है और अनेक प्रकारके रोग भी आकर घेर लेते हैं, क्योंकि स्वच्छता आरोग्यताकी जननी है। भोजनके पदार्थ बहुत सावधानीसे शोध बीनकर तैयार करना, क्योंकि भोजनके पदार्थोंमें बहुतसे कीड़ी मकोड़ी आदि जीव चढ़ जाते हैं अथवा लट (सुंड़ी इल्ली) आदि जीव उत्पन्न हो जाते हैं, सो विना शोधे भोजन बनानेमें एक तो इन विचारे अवाक् जीवोंकी हिंसा होती है, दूसरे इन जीवोंका कलेवर तथा विषैले मलादिक पदार्थ पेटमें पहुंचकर बहुत हानि पहुंचाते हैं और कभी कभी तो इनसे प्राणों तकका भी घात हो जाता है।

(१४) बेटी! प्रातःकाल उठ कर प्रथम ही घरको झाड़ बुहार तथा लीप पोत कर सामनेके मार्गमें स्वस्तिक (साथिया) 卐 निकालना, यह द्विजों (ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य आदि उत्तम वर्णों) के घरोंका चिन्ह है। यह चिन्ह ऐसे स्थानमें बनाया जाय जिससे सर्व साधारण लोगोंके

दृष्टिगोचर होता रहे, जिसे देखकर सत्पात्र मुनि आदि भिक्षाके लिये भी आवें ।

(१५) गृह-चैत्यालयकी सम्हाल भले प्रकार रखना और नित्य तीनों समय अवकाशानुसार श्री अर्हंत देवकी छविका दर्शन, स्तुति व वंदन करना और स्वप्नमें भी कभी अन्य रागी द्वेषी कुदेवोंका आराधन नहीं करना, न अन्यसे कराना, न करनेवालोंकी सराहना करना, क्योंकि इन (कुदेवों) के आराधनसे लौकिक कार्यकी तो सिद्धि होती नहीं और परलोकमें जन्ममरणादि अनेक दुःख भोगना पड़ते हैं ।

(१६) बेटी ! अपने माथेके बाल इस प्रकार गूंथ कर बांधना कि जिससे तेरी गणना उच्च कुलांगनाओंमें की जावे । अपने पतिमें श्रद्धा रखकर नित्य प्रातःकाल स्नानानंतर माथेमें कुंकुम की टीकी करना । यह सौभाग्यवती स्त्रियोंका चिन्ह है । प्रायः स्त्रियां ललाटमें केवल भोडल व अन्य धातुओंकी बनी हुई टिकली रालसे चिपका लेती हैं, परंतु यह उनका प्रमाद है । टीकी कुमकुम (रोली) की ही मंगलीक मानी गई है । यदि घरमें फुलवाड़ी हो, और वह फूले, तो सांझ समय फूले हुवे फूल बीनकर उनका हार आदि भी गूंथ लिया करना और झाड़के नीचे शुद्ध वस्त्र इस प्रकार बांध दिया करना, कि जिससे रात्रिको खिल कर झड़नेवाले फूल पृथ्वी पर न पड़ने पावें, क्योंकि इसी प्रकारके पृथ्वी पर न गिरे हुवे शुद्ध प्राशुक जीवादिसे रहित फूल ही श्रीजीकी पूजामें काम आ सकते हैं ।

(१७) बेटी, तू सब वस्त्राभूषण उच्च कुलांगनाओंके अनुसार ही पहिरना कि जिससे दोनों कुलकी लाज रहे। आजकाल प्रायः नवीन सभ्यतावाली उद्दण्ड स्त्रियां नकली (गिलट व मुलम्मेवाला) जेवर और महीन (पतले झिरझिरे) कपड़े पहिनकर रहतीं व बाहर आती जाती हैं, जिससे उनका सारा शरीर दृष्टि पड़ता है, जो उनके पवित्र शीलरूपी भूषणके लिये बड़ा भारी दूषण है; सर्वोत्तम वस्त्र खादीका ही पवित्र होता है।

(१८) बेटी तू बहुत आभूषण पहिरनेकी तृष्णा मत करना, किन्तु सदैव सद्गुण रूपी भूषणोंसे अपने आपको भूषित रखनेकी पूर्ण चेष्टा करना। पतिसेवा करना स्त्रियोंका मुख्य धर्म है, इसलिये सदैव उमंगके साथ पतिकी सेवा चाकरी व आज्ञापालन करना। कभी भी ऐसी कोई बात न करना कि जिससे पतिको कष्ट पहुंचे, व उनका चित्त दुखे। तू हर प्रकारसे पतिको प्रसन्न रखनेकी चेष्टा करते रहना, क्योंकि संसारमें वही तेरा सर्वस्व है। स्वप्नमें भी पति सिवाय अन्य पुरुषोंमें हास्यादि भंड वचनरूप व्यवहार न रखना, न किसीकी ओर कुदृष्टि डालना। अपनेसे बड़े पुरुषको पिता समान, समवयस्कको भाई और लघुवयस्क युवा बालकादिको पुत्रवत् समझना। यही तेरा सच्चा आभूषण है।

(१९) शाक, भाजी, चटनी, अचार मुरब्बा, तथा अनेक भांतिका पकवान, मिष्टान्न आदि समयानुसार जो अपने घरके

लोगोंको रुचिकर प्रकृतिके अनुकूल तथा धर्म व कुलाचारके अविरुद्ध हों. वे मर्यादापूर्वक तैयार करना, क्योंकि मर्यादाके बाहिर इन वस्तुओंमें त्रस जीवोंकी उत्पत्ति हो जाती है, जिससे वह अभक्ष्य हो जाती हैं। रसोई बहुत चतुराईसे पाकशास्त्रकी विधि प्रमाण करना। कच्ची व खरी वस्तु बेस्वाद होनेके सिवाय रोगोत्पादक भी होती हैं। यदि घरमें रसोईदारिन हो तो तू उसके साथ भोजनकी सम्हाल चौकस रखना, क्योंकि समस्त कुटुम्बका रक्षण व आरोग्यता भोजनपर ही निर्भर है। दोपहरको अवकाश मिलनेपर घरके फटे पुराने वस्त्रोंका सुधारना, अथवा बच्चोंकी झंगुलियां, टोपी, कांचली (अंगिया चोली), ओढ़नी, घांघरा आदि सुधारना व नवीन सीना। बेल-बूटादि काढ़ना, गुलबंद, तोरण, वेष्टन, आदि गूंथना तथा रेहटियासे सूत कातना, क्योंकि स्त्रियोंको निकम्मा रहना ठीक नहीं है। निकम्मे रहनेसे मन इधर उधर व्यर्थ भटकने लगता है।

(२०) घरके छोटे छोटे बच्चोंको अवकाश पाकर अपने पास खिलाना और उन्हें छोटी छोटी चित्त प्रसन्न करनेवाली कथायें तथा प्राचीन वीर पुरुषों और सती स्त्रियोंके आदर्श चरित्र सुनाया करना। परन्तु भय और शंका उत्पन्न करनेवाली भूत प्रेतादिकी कथायें तथा दुष्ट नीच पुरुषोंद्वारा संग्रहीत विषयोत्पादक कुकथाएं कभी नहीं सुनाना, न आप सुनना, क्योंकि इन विकथाओंसे बालकोंके तथा अपने चितपर भी बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। प्रत्येक कथाके अंतमें उसका उत्तम तात्पर्य

अवश्य समझाना, जो कथा सुननेसे किसीको बुरी लगे ऐसी कथा, व पहेली तथा कहावतें नहीं कहना और न कभी कुतर्क रूपसे किसी पर कुछ कटाक्ष करके बोलना ।

(२१) व्याहकार्य लोकमें आजकाल एक वजनदार वेड़ी समझी जाने लगी है, क्योंकि कुपढ़ अज्ञान स्त्रियां ससुरालमें जाकर ससुरालवालोंको अपने दुष्ट स्वभावका परिचय देकर नाना भांतिके नाच नचातीं और निरंतर कलह करके घरमें फूटका अंकुरारोपण कर एक ही घरमें कई चूल्हे कर डालती हैं । और गृहस्थोंके घरोंमें कलह व फूटका होना ही उनके नाशका चिन्ह है । इससे अनेक घराने नष्ट होते देखे गये हैं । इस लिये तू ऐसा वर्ताव करना कि जिससे लोकमें तेरी प्रशंसा हो और स्त्री जाति परसे यह कलंक उठ जावे तथा व्याहको मनुष्य सच्चे सुखका साधन समझने लगें । यथार्थमें देखा जाय तो जिस घरमें सती पतिव्रता सुआचरणी स्त्री रहती है, वहां ही लक्ष्मीका वास होता है और वह घर स्वर्गके तुल्य होता है । इसीसे लोग स्त्रीको ही लक्ष्मी कहते हैं ।

(२२) लग्न (व्याह) के समय जो वचन तूने अपने पतिको दिये हैं, उनको तू सदैव स्मरण रखना जैसे (१) मम गुरोस्तथा कुटुम्बिजनानां यथायोग्यं विनय सुश्रूषा करणीया (मेरे गुरू तथा कुटुम्बिजनोंकी यथायोग्य विनय सुश्रूषा करना) (२) ममाज्ञा न लोपनीया (मेरी आज्ञा उलंघन नहीं करना) (३) कठोर वाक्यं न वक्तव्यम् (कटुवचन न बोलना) (४) मम

हितोः सत्पात्रादि जनानां गृहागमे सति आहारादि दाने कलुषित मनो न कार्यम् (मेरे हितु संबंधी, मित्र, बान्धवादि, सत्पात्र दिगम्बर जैन तथा उदासीन संयमी साधु श्रावक वा अन्य साधर्मी, आदि जनोंके मेरे घर आनेपर आहार आदि दान देनेमें कलुषित मन नहीं करना) (५) अभिभावकस्य आज्ञा विना परगृहे न गन्तव्यम् (अपने गुरु जनों तथा संरक्षकोंकी आज्ञा विना किसी दूसरेके घर नहीं जाना (६) बहुजनसंकीर्ण स्थाने कुत्सित धर्मे तथा व्यसनासक्त जनानां गृहे न गन्तव्यम् (बहुत आदमियोंकी भीड़ जहां हो ऐसे संकुचित स्थानमें खोटे धर्मवालोंके स्थानमें, तथा द्यूतादि सप्त व्यसनोंमें आसक्त पुरुषोंके स्थानमें नहीं जाना) (७) गुप्त वार्ता न रक्षणीया तथा मम गुप्त वार्ता अन्याग्रे न कथनीया (मुझसे कोई बात न छिपाना तथा मेरी व मेरे घरकी गुप्त वार्ता किसीसे न कहना) ये सात वचन देने पर ही तुझे तेरे पतिने वाममार्गमें ग्रहण किया था ॥

सो इनको सदैव पालन करते रहना।

(१२) बेटी ! लग्नका समय (मुहूर्त) न निकल जाय, इसी चड़बड़में लोग ज्यों त्यों कर रीति व रसम पूरी करके गंठजोड़ादि सप्तपदी कर देते हैं और गृहस्थाचार्यके द्वारा पढ़े हुवे पवित्र मंत्र व पतिको पत्नीकी ओरके वचन, और पत्नीको पतिकी ओरकी शिक्षा व वचनोंको समझने व समझानेकी कोई फिक्र ही नहीं रखता है। इस लिये मैं उक्त सप्त

वाक्योंके सिवाय और भी कुछ शिक्षा खुलासा रीतिपर कहती हूं, क्योंकि यह तेरी भलाईका कारण है। सो तू ध्यानसे सुन—

पति कहता है—

(क) ऐ स्त्री ! तू मुझको अति आदरसे वरती है। तू मेरे साथ वृद्ध होवेगी। तुझे सौभाग्य देनेके लिये मैं तेरा कर गृहण करता हूं; दैव (कर्म) ने मेरे घर तथा वंशकी रक्षाके लिये ही तुझे मेरे आधीन किया है।

(ख) हे स्त्री अब तक तू अपने मातापितादिको ही प्रेमकी दृष्टिसे देखती थी, परन्तु आजसे तू मेरे मातापितादि कुटुम्बीजनोंमे प्रेम जोड़ ! क्योंकि अब तुझे उनहींके निकट अधिकतर रहना है।

(ग) हे स्त्री ! आजसे मेरा सम्बन्ध तुझसे हुवा। जिस प्रकार चन्द्रमाका चांदनी, सूर्यका रोहिणी तथा दीपकका प्रकाशसे सम्बन्ध है, उसी प्रकार तू भी आजसे मेरी अर्धांगिनी हुई, इसलिये हम तुम दोनों अपने२ वचनोंका निर्वाह करते हुवे, गृहस्थ धर्मका पालन करके उत्तम संतान उत्पन्न करेंगे।

(घ) हे स्त्री ! हम दोनोंको परस्पर निष्कपट प्रेम रखना चाहिये और परस्पर हितकारी तथा सम्मतिपूर्वक वचन कहना चाहिये। दोनोंको हिलमिलकर (सम्पसे) रहना चाहिये, क्योंकि हम दोनोंको जीवन पर्यन्त साथ रहना है।

(ङ) हे स्त्री ! आजसे तू हमारे कुलमें सम्मिलित हुई इस

लिये तू मेरे वाम भागमें आ और अपने मनको अपनी प्रतिज्ञाओं पर दृढ़ कर।

(१४) बेटी तत्पश्चात् जब सप्तपदी (सात भांवर) होती हैं, तब वर (पति) प्रत्येक पदपर पत्नीसे कहता है, उसका भी आशय तू सुन। पति कहता है

(क) हे स्त्री! अब तू मेरे साथ एक पद (प्रदक्षिणा) चली, जिससे तू मेरी सहायक समझी जाती है, इस लिये तू मुझे सम्पूर्ण गृहकार्योंमें सहायता करना और भोजनादिकसे मेरी पूर्ति करते रहना।

(ख) हे स्त्री! अब तू मेरे साथ दूसरा पद चली, इससे स्नेहकी वृद्धि हुई। इसी प्रकार अपनी प्रीति चन्द्रकलाकी समान बढ़ती जावे, और तुमसे मेरा बल भी बढ़ता रहे

(ग) हे स्त्री! इस तीसरे पदसे तू मेरी संम्पत्तिकी वृद्धि करनेवाली हो।

(घ) हे स्त्री! तू इस चौथे पदसे मेरे मनवांछित सुखकी वृद्धि करनेवाली हो।

(ङ) हे स्त्री! तू इस पांचवें पदसे मुझे संततिकी वृद्धि करनेवाली हो।

(च) हे स्त्री! तू इस छठवें पदसे मुझे ऋतुओंके समान क्रीड़ा रूप हो।

[छ] हे स्त्री! यह सातवां पद मेरे हृदयमें तेरी ओरसे दृढ़ प्रीतिका देनेवाला हो और अपन दोनों गृहस्थाश्रममें सलाह [सम्प] से रहें।

(सा६) बेटो ! इस प्रकार सप्तपदीका रहस्य कहकर पति और भी कुछ विशेष सूचना करता है, सो सुन—

पति कहता है—

(क) हे स्त्री ! तू सदैव मेरे विचारोंमें सम्मिलित रहना। समस्त जीव मात्रको समान रीतिसे देखना। ऐसी कोई बात जिससे मुझे दुःख उत्पन्न होवे, नहीं करना और न विना मेरी आज्ञा कोई भी कार्य अपने मनोनुकूल करना, इसीमें तेरा कल्याण है। यथोक्तं—

मदीय चित्तानुगतं च चित्तं, सदा ममाज्ञा परिपालनं च।
पतिव्रताधर्मपरायणं त्वं कुर्यात् सदा सर्वमिदं प्रयत्नं ॥

अर्थात्—सदैव मेरी इच्छानुसार चलने और मेरी आज्ञाओं के पालन करनेका ध्यान रखना और जिस प्रकारसे पातिव्रत धर्म पालन हो ऐसा प्रयत्न करते रहना।

(ख) हे स्त्री ! मेरे द्वारा रक्षित जो पशु पक्षी, तथा आश्रित जन हों उनका भले प्रकार पालन करना, उन्हें यथायोग्य संतुष्ट रखना, तू भी संतोषवृत्तिसे रहना और कभी भी अपने चित्तको चंचल नहीं होने देना।

(ग) अपना सुख वा दुःख जो कुछ भी हो, एकान्तमें मुझसे ही कहना, और घरकी वात वाहर कभी किसी अन्य स्त्री पुरुषोंसे नहीं कहना।

(घ) सदैव सासु ससुर, देवर, जेठ देवरानी, जिठानी, ननद व बालबच्चोंसे विना किसी प्रकारके द्वेष भावके वर्ताव करना। जिससे तेरी कीर्ति व यश हो और घरमें फूट न पड़ने पावे।

(ङ) हे स्त्री ! तू मेरे कुलका भूषण बन कर मेरे तन, धन तथा जनकी पूरी पूरी सम्हाल रखना । ये शिक्षाएं (जो आज मैं तुझे दे रहा हूं) तू कभी मत भूलना। इसी में तेरा कल्याण व श्रेय है और इसीसे तू सुखको व यशको प्राप्त होगी ।

(२६) बेटा ! इस प्रकार लग्न समय तुझे तेरे पति द्वारा शिक्षाएं हुई हैं, उनको तू भले प्रकार पालन करना, जिससे तुझे सुख मिले और दोनों कुल वृद्धि तथा यशको प्राप्त होकर संसारमें आदर्श रूप हों ।

(२७) बेटी ! तू बड़ोंकी आज्ञा पालन करना, और छोटों पर प्रेम रखना । कहा है ।–"गुरुजनको भक्ती सदा अरु छोटों पर प्रेम, सम वय लख आदर उचित, करो, निबाहो नेम" । किसीसे ईर्षा नहीं करना । नौकरों पर माताके समान क्षमा और प्रेम रखना । अपने पिता अथवा ससुरका सम्पत्तिका मान नहीं करना और न उनकी गरीबीमें कभी घबराना । उत्तम पुरुष सम्पत्ते विपत्तिमें सदा एक ही भांति समुद्रके समान गंभीर रहते हैं, वे कभी मर्यादा नहीं छोड़ते ॥

(२८) धर्म, नीति व सत्य हितोपदेशकी पुस्तकोंका स्वाध्याय तू अवश्य ही अवकाशानुसार करते रहना, परंतु दंतकथाओं व श्रृंगाररससे भरी हुई पुस्तकोंको कभी हाथ भी नहीं लगाना और न नाटक आदि, मनको बिगाड़नेवाले खेलोंको कभी देखने सुननेकी इच्छा रखना । परंतु हां ! ईश्वर भक्ति व नीति तथा धर्मके गीतोंको गाने तथा सुनने में हानि नहीं है । इस-

लिये जब कभी जी चाहे तब ऐसे भजन-गान सुरतालसे गाया व जोड़ा करना।

(२९) बेटी! अपने पति (घर) की आमदनी देख कर उसी प्रमाण खर्च करना। आयसे अधिक व्यय करनेसे पीछे बहुत कष्ट उठाना पड़ता है। कहा है—

अपनी पहुंच विचार कर, कर्तव्य करिये दौर।
उतने पांव पसारिये, जितनी लांबी सौर॥

बेटी प्रायः पुरुषोंकी बारीक दृष्टि नहीं रहती है, इसलिये घरके कामोंमें मितव्ययता रखना और बचत करना, यह स्त्रियोंका ही काम है और यह लाभदायक भी है।

(३०) घरमें नौकर चाकर प्रायः हल्की जातिके व कम वेतनवाले भी होते हैं। सो जब ये लोग बजारसे कोई वस्तु लावें तो तू कभी कभी उन वस्तुओंकी तौल माप व तपास भी कर लिया करना ताकि ये लोग चोरी में पकड़े जानेसे व ठगाई आदिसे बचे रहें तथा और भी किसी प्रकारकी ऐसी कोई बुराई न सीखने पावें। और देख! नौकरोंसे वार वार तकरार नहीं करना और न उन्हें अपने मुंह लगाना।

(३१) नौकर चाकरोंसे एसा वर्ताव रखना जिससे वे तुम्हें गंभीर दम्पति समझते रहें। उनके मनमें तुम्हारी ओरसे मान रहे। और देख! व्यय तथा आयका हिसाब भी बराबर रखते रहना इससे ही तू बचत कर सकेगी और अपव्ययसे बचेगी। तात्पर्य—तू सब प्रकारसे गृहिणी शब्दको सार्थक करना।

(३२) बेटी ! हरएक वस्तुका बाजार भाव प्रायः कम ज्यादा होता रहता है इस लिये अवसर देखकर तू घरमें अनाज गुड़, घी आदि पदार्थ भी संग्रह कर रखा करना तथा योग्य समयमें धनका व्यय भी यथायोग्य करके अपनी उदारवृत्तिका परिचय देते रहना । परन्तु "अकाले दिवाली" अर्थात् व्यर्थव्यय कभी नहीं करना ।

(३३) बेटी ! "कौड़ी कौड़ी खजाना और बूंद बूंद तलाना" भर जाता है. ऐसा करके गरीब भी पैसावाला बन सकता है. इस लिये तू अपने घरकी आय व्ययका विचार करके समयानुसार कुछ कुछ बचत भी करते रहना

(३४) बेटी ! तू निरंतर अपनी शक्ति प्रमाण आहार, औषधि, शास्त्र और अभय ये चार प्रकारके दान भी करते रहना । धर्मायतनोंमें, सत्पात्रादिकोंमें भक्ति और दीन-हीन पुरुषोंमें, करुणाभाव रखना क्योंकि हाथका दिया ही साथ जाता है । इसलिये इसमें संकोच न करना, अर्थात् शक्ति नहीं छुपाना । मनुष्यको अपनी आयका चतुर्थांश व षष्ठांश व दशमांश अवश्य ही दान करना चाहिये । चतुर्थांश विपत्ति-काल व वृद्धावस्थाके लिये और चतुर्थांश लग्नादि व्यवहारका-र्योंके लिये अवश्य ही संग्रह रखना चाहिये और शेषांष भोजन वस्त्रादिमें व्यय करना चाहिये । परन्तु निम्न वाक्य भी याद रखना कि—

नीति न भीत गलीत है, संपति धरिये जोर ।
खाये खर्चे (दानसे) जो बचे, ता जोरिये करोर ॥

अर्थात्, भूखे मरकर या व्यवहार बिगाड़ कर छोड़ना भी अच्छा नहीं होता।

(१५) (बेटी) तेरे घरमें जो सद्व्यवहार व उत्तम रीति नीति कुलपरंपरासे चली आती हो, उसे इकदम बिना समझे नहीं छोड़ देना किन्तु श्रद्धा सहित पालन करना और जो व्रत-नियम स्त्रियोंके लिये आवश्यक हों, उन्हें समझकर बराबर करते रहना क्योंकि वर्तमान कालमें ईश्वर (परमात्मा) की प्राप्तिका द्वार केवल भक्तिमार्ग ही है।

(१६) बेटी! कभी भी शांतिता, दया, क्षमा शील, संतोष, विनय, सदाचार व भक्तिको नहीं भूलना और सदा उदार वृत्ति रखना। रिसकरके नहीं बैठना, न निकम्मी बैठना और न कभी किसीसे कुछ मांगना व क्रोधके आवेशमें आकर कभी कटुक वचन भी मत बोलना। हठ नहीं करना, छुपकर चोरीसे नहीं खाना और अकेली कभी कहीं मत जाना। परपुरुषके साथ कभी मत हसना, न उससे एकान्तमें बात ही करना। यह परपुरुषों अर्थात् समधी (विवाई) नन्दोई देवर, बहनोई आदिसे हंसी करने व होली खेलनेकी नीच प्रथा पापी व्यभिचारी जनोंने चलाई व स्वीकार की है, सो तू इसे स्वीकार मत करना। यह शीलव्रतको घातनेवाली है, ऐसा स्वच्छंद वर्ताव दुःखदाई होता है। कहा है "महावृष्टि चलि फूट क्यारी, जिमि स्वतंत्र है बिगरहिं नारी"। तात्पर्य स्त्रियोंको बालापनमें मातापिताके, तरुणावस्था और वृद्धावस्थामें पतिके और यदि अभाग्यवश पतिवियोग हो जाय; तो पुत्रोंके आधीन रहना चाहिए।

(३७) बेटी ! मैं फिकरसे तुझे कहती हूं, कि संसारमें स्त्रियोंको उनका पति ही देव है और इसी पतिरूपी देव (ईश्वर)की कृपासे स्त्रियोंको पुत्र पौत्रादि विभव व इह लोक और परलोकमें सुख और यशकी प्राप्ति होती है। जिस घरमें पत्नी, पतिकी आज्ञाकारिणी व पतिव्रता है, और दम्पतिमें प्रीति व सलाह है वह घर यथार्थमें स्वर्ग तुल्य है।

यस्य पुत्रो वशे भृत्यो भार्या यस्य तथैव च।
अभावे सति संतोषः स्वर्गस्थोऽसौ महीतले ॥

अर्थात् जिसका पुत्र, भृत्य और स्त्री वशमें हो तथा निर्धनतामें संतोष हो, उसे यहीं स्वर्ग है।

इसलिये तू अपना तन, मन और धन अपने पतिको अर्पण कर देना और पतिसे विमुख स्वप्नमें भी न रहना।

(३८) बेटी ! बहुत सी स्त्रियां पतिको वश करनेके लिये व सन्तानकी इच्छासे, जोगी, जांगड़ा, गुनियां, जोषी, भेषी आदिकी सेवा करने लगती हैं और उन्हें अपना धन देती हैं। यहां तक कि बहुत सी स्त्रियां उनसे गंडा, फूंदरा, तावीज आदि बनवाने तथा झाड़ा फूंकी करानेके लिये, एकांतमें अकेली, अपने ही घरमें, किसी देवी देवताके स्थानोंमें व उनके स्थानों पर जाकर मिलतीं, और उनके फंदेमें फंसकर बलात्कार अपना शीलाभरण गुमा बैठती हैं व कोई २ देवी, दिहाड़ी, यक्ष, यक्षिणी, भूत, प्रेत, भैरों, भवानी, हनुमान, चंडी, मुंडी, सती, पीर पैगम्बर ग्रहादिकी पूजा करती हैं व इन्हें मनानेके लिये समय कुसमय, ठौर

कुठौर अकेली जाती हैं। वहां पर भी ये दुष्ट पुरुषोंद्वारा सताई जाकर अपना शील और द्रव्य दोनों खो आती हैं। क्योंकि प्रायः ऐसे स्थानोंमें चोर और व्यभिचारी पुरुष प्रगट या लुके छिपे रहते हैं, जो समय पाकर छक्का पौ कर डालते हैं। बेटी! इसमें इष्टसिद्धि कुछ नहीं होती है। केवल मात्र धन और धर्म जाता है। यदि इन जोगी जांगड़ोंमें पुरुष वशीकरण और सन्तानोत्पादन शक्ति होती, तो घर बैठे ही पुजते, घर घर मारे मारे नहीं फिरते। देवी देवतामें यह शक्ति होती तो वध्याको, कुंवारीको और सदाचारिणी विधवाको भी पुत्र हो जाता। सो ऐसा न कभी देखा है और न सुना है। ये सब केवल झूठे पाखंड हैं। तू भूलकर किसीके हजार बहकानेसे भी इनके फेरमें न आना। कर्मकी गति कोई नहीं टाल सक्ता है। पतिवशीकरणका मंत्र "पतिकी सेवा" है। और यही (यदि शुभ उदय हो तो) सन्तानोत्पतिका ताबीज है! इसलिये मेरी प्यारी बेटी! तू सब व्यर्थ झगड़ोंको छोड़ कर, अपने पतिकी सेवा सच्चे मनसे करना, इसीमें तेरा कल्याण है।

(१९) बेटी! यदि किसी समय तेरा पति व गुरुजन तुझे कटुक वचन कहें व पति ताड़न भी करे तो तू मनमें क्रोध व खेद नहीं करना, न पतिका दोष देखना किन्तु अपनी भूल व दोष देखना, "कि यह कटु वचन व ताड़न मेरे पतिने मुझे किस कारणसे किया है"। उस पर विचार कर पुनः उन दोषों व कारणोंको नहीं होने देना, जिससे कि पुनः ताड़न मिलनेका अवसर न आवे। वह ताड़न अपनी भलाईके ही लिये समझना।

मनुष्य प्रायः पराये दोष देखनेमें ही अमूल्य समय खो देते हैं। सो यदि वह समय अपने ही दोष देखनेमें व उनका निराकरण करनेमें बिताया जाय तो कितना अच्छा हो ?

(४०) बेटी ! तेरा पति उत्तम कुलीन, सुन्दर, रूपवान्, देवतुल्य सौम्य मूर्ति, सदाचारी, गुणी, पुरुषार्थी और सज्जन पुरुष है सो प्रथम तो तुझे ऐसा कुअवसर ही नहीं मिलेगा, जिससे कि तुझे तेरे पतिके सम्बन्धमें व्यसनादि सेवन करनेका समाचार सुन पड़े। और यदि (दैव न करे कि) किसी प्रकार तेरे पूर्व अशुभ कर्मके उदयसे तेरे पतिमें ऐसा ही कोई दोष कदाचित् उत्पन्न हो जाय या तुझे उनके प्रति ऐसी शंका उत्पन्न हो जाय तो, तू उनसे घृणा, द्वेष, क्रोध, व मानादि नहीं करना, क्योंकि तू उससे जितना द्वेष व घृणादि करेगी वे तुझसे उतने ही दूर होते चले जायगे और व्यसनोंमें फंसते जायगें। देख कभी गरम लोहा गरम लोहेसे नहीं कटता है किन्तु ठंडेसे ही कटता है" ऐसा जानकर तू क्षमा व शांति धारण कर, उस अवसरमें पहिलेसे भी अधिक प्रेम बढ़ाना ताकि उन्हें तेरी ओरसे शंका न होने पावे और सुअवसर देखकर मृदु हास्य वचनोंमें त उनके वे वाक्य जो उन्होंने तेरे मांगनेपर तेरा पाणिग्रहण करनेक समय दिये थे, स्मरण करा दिया करना। बश यही उनको सुमार्गमें लानेका सच्चा उपाय है। परन्तु बेटी ! मैं तुझे निश्चयपूर्वक कहती हूं, कि जो स्त्रियां अपने पतिकी तन मनसे सेवा करतीं और अंतःकरणसे उन पर सच्चा प्रेम रखती हैं तो उनके पति भी उन्हें प्राणेश्वरी देवी करके हृदयस्थ कर लेते हैं। देख

सीता सती पतिव्रता थीं तो रामचन्द्र भी स्त्रीव्रता थे। वे जब सीता हरी गई, तो उसके वियोगसे पागल हो गये थे। तू यह न जान कि रामने सीताको बनमें छोड़ी थी और अग्नि प्रवेश कराया था, इससे उनका सीता पर कुछ प्रेम कम हो गया था। नहीं बेटी, वे राजा थे, इस लिये उनको प्रजाका सन्देह निवारणार्थ सीता पर अपने प्राणोंसे भी अधिक प्रेम करते हुए और उसे सती जानते हुए भी बनवास और अग्निप्रवेश लाचार हो कराना पड़ा था! पवनञ्जय सुखानंद, जयकुमार आदि बहुत महापुरुषोंके चरित्र पुराणोंमे भरे पड़े हैं जिनसे विदित होता है, कि पुरुष भी अपनी सती शुशील स्त्रियोंको देवी करके मानते हैं। यदि स्त्री चाहे, तो अपने पतिको अपनी सेवा तथा प्रेमसे सुमार्गी और (द्वेष कलह इत्यादिसे) कुमार्गी बना शक्ती हैं। सो हे मेरी दुलारी बेटी! तू उन्हें प्राणेश्वर देव करके ही प्रेम, भक्ति व सेवा करना।

(४१) बेटी! जब कभी तुझे बहुत खेद पीड़ा व रोगादिककी वेदना, अथवा अन्य कुछ भी दैनिक व्यथा उत्पन्न हो तो तू अपने धैर्य व धर्मसे नहीं डिगना किन्तु सीता, द्रौपदी, चेलना, मनोरमा, मैना, रयनमंजूषा आदि महा सतियोंके चारित्रोंको स्मरण करना अथवा नर्क व पशुगतिके दुःखोंका चितवन करके यह विचार कर कि "देखो! इन सतियोंको व उन मुनियोंको कैसे घोर उपसर्ग व कष्ट आये थे तथा नारकियोंको कितना दुःख है? मुझे तो उसका असंख्यातवां भाग भी नहीं है"

दृढ़ता रखना, क्योंकि " धीरज धर्म मित्र अरु नारी, आपति काल परखिये चारी।"

(१२) बेटी ! विभव पानेपर अहंकार न करना और अपनेसे बड़े धनी, मानी, ज्ञानी पुरुषोंके चारित्र व स्वर्गकी सम्पत्ति व वैभवको विचार कर कि "पुण्यके प्रभावे, इन्द्रादि देवों व राजाओं और अमुक २ सेठोंके कितनी सम्पत्ति व रूप बल विद्या संयम आदि हैं, सो मेरे तो उसका अंश भी नहीं है" शांत रहना। क्योंकि संसारमें छोटे, बड़े, धनी, निर्धन, मूर्ख, विद्वान, आदिका व्यवहार परस्पर सापेक्ष है। वास्तवमें यह सब कर्मकृत उपाधि हैं। इसका मान करना व्यर्थ है।- कहावत है-" जब तक ऊंट पहाड़ के नीचे नहीं जाता, तभी तक अपनेको बड़ा समझता है।" इसलिये आम्रवृक्षके समान विभवमें नम्र रहना।

(१३) बेटी। आजकल प्रायः लोगोंमें ईर्षाभाव बहुत देखनेमें आता है। ये लोग दूसरोंको सुखी देख निष्कारण उनमें फोड़तोड़ मचाकर दुःखी कर देते हैं। इसलिये यदि कोई हजार सौंगंध खा कर भी तुझसे तेरे घरवालोंकी कुछ बुराई बतावे तो तू कदापि उसे सत्य मत मानना और ऐसी घृणित बातें सुननेकी इच्छा ही रखना। किन्तु उन कहनेवालोंको ऐसा मुखबंद उत्तर देना ताकि वे फिर कभी तुझे ऐसी बातें सुनानेका साहस न करें।

(१४) बेटी ! यदि तू कभी कहीं किसीसे अपने घरकी भलाई बुराई सुन आवे, तो तुरत आकर अपने घरमें प्रगट कर देना ताकि उस पर विचार होकर योग्य प्रबन्ध किया जावे,

क्योंकि अपने दोष अपने आपको नहीं दीखते हैं। और देख! कभी भी अपने मुंहसे अपनी बड़ाई व दूसरोंकी बुराई मत बताना। कितने लोग योंही चिढ़ाने चमकाने व हंसाने आदिके लिये कौतुक रूपसे भी स्त्रियोंको उनके मां बापकी भलाई बुराई कहने लगते हैं सो तू इससे मनमें खेद न करना, क्योंकि जिसने बेटी दी है उससे नम्र और कोई नहीं है। संसारमें धैर्य (सहनशीलता) बड़ी गुणकारी वस्तु है सदा उसका अवलंबन करना।

(४१) हे बेटी! तू तो आप ही स्यानी है; तूने यहां सब कुछ देखा व सुना है। आजसे तेरा नवीन संसारमें प्रवेश होता है, इसलिये जो २ बातें मैंने कही हैं अथवा तूने देखी सुनी हैं उनके अब तुझे स्वानुभव करनेका समय आया है। अभीतक वे सब कोरी कथायें हो थीं परन्तु अब उनका सच्चा दृश्य तुझे दृष्टिगोचर होगा। लोग प्रायः थियेटरोंमें नाटक वगैरह खेल, रुपया लगाकर देखने जाते हैं, परंतु यह उनकी भूल है। उन्हें कृत्रिम भेषधारियोंके कल्पित खेलोंमें क्या मिलता है? किन्तु गृहस्थाश्रमरूपी रंगभूमिमें रहकर ही संसारके सच्चे स्वरूपका अनुभव करके, सच्चे (आत्मीक अविनाशी) सुखपर दृष्टि लगाना और इसी नरजन्मसे ही उसे प्राप्त करनेका उद्यम करना चाहिए। यही सार है।

(४६) हे बेटी! अब तू खुशीसे जा तू पुत्रवती हो, सौभाग्यवती हो, और सीता सावित्री जैसी आदर्श रमणी हो। जा! तेरे लिये सवारी तैयार है, समय भी हो गया है, इसलिये देरी मत कर। इस प्रकार माताने शिक्षा दे पुत्रीके मस्तकपर हाथ

रखकर आशीर्वाद दिया, और पुत्री भी माताके चरण स्पर्शकर प्रेमाश्रु गिराते हुए, उक्त शिक्षाओंकी मणि माला कंठमें पहिन कर धीरे धीरे पालकीमें आ बैठी।

(४७) पश्चात् सासु अपने जमाई (दामाद) की ओर देखकर बोलीः-लालाजी! यह पाद प्रक्षालन करनेवाली दीन टहलनी, आपकी सेवाके लिये दी है, इस लिये आप इसके गुण दोषों पर विचार न कर अपने बड़े कुलका ही ध्यान रखकर इसका जीवन निर्वाह कीजिए। मैं आपकी कुछ भी सेवा सुश्रूषा करनेमें समर्थ नहीं हुई न कुछ दहेज ही दे सकी हूं सो क्षमा कीजियो, क्योंकि आप बड़े हैं और बड़ोंके यहां सबका निर्वाह हो सकता है। " आप बड़े सरदार हो जानत हो रस रीति। ऐसी सदा निबाहियो गासो घटे न प्रीति॥ " ऐसा कह सासुने जमाईको नवीन फल (श्रीफल) तथा कुछ सुवर्ण व रूप्य मुद्रा भेट देकर विदा किया॥

(४८) सासुकी नम्र विनती पर जमाईने भी सासुको मिष्ट वचनोंमें संतोष कर कहा-"सासूजी! आपने मुझे बहुत कुछ दिया है। गृहरत्न दिया, इससे अधिक बहुमुल्य पदार्थ संसारमें और कौन हो सकता है? जिस प्रकार वह यहां रहती थी उसी प्रकार वहां भी उसके लिये माताजी उपस्थित हैं। आप कोई चिंता न करें। हम लोग सदैव आपकी आज्ञानुसार उपस्थित हो सकते हैं। सासूजी! संसारमें सब प्राणी अपने अपने गुण कर्मानुसार ही सुख दुःख बना लेते हैं। यथार्थमें जीवको सिवाय उसके गुण दोषों (स्वकृत कर्मों) के कोई भी सुख दुःख देने-

वाला नहीं हो सकता है। तो भी मैं यथाशक्ति उसे अपने घरकी लक्ष्मी बनानेमें कसर न रक्खूंगा। मुझे स्मरण है कि:— मैंने जो सप्त वचन व्याह समय आपकी प्यारी पुत्री और अपनी प्राणेश्वरी अर्द्धांगीको दिये थे वे निम्न प्रकार हैं। मैं उनका भले प्रकार पालन करूंगा ॥

[१] परस्त्रीभिः (पाणिगृहीतातिरिक्त) क्रीड़ा न कार्या [परस्त्रीसेवन नहीं करना।] [२] वेश्यागृहे न गन्तव्यम् [वेश्या (गणिकाके) घर न जाना ।] [३] द्यूतक्रीडा न कार्या [जुआ नहीं खेलना] (४) उद्योगाद्द्रव्योपार्जनेन मम अशनवस्त्राभरणानि रक्षणीयानि [उद्योग द्वारा द्रव्य उपार्जन करके मेरे भोजन वस्त्राभूषणोंकी रक्षा करना।] (५) धर्मस्थाने न वर्जनीया (धर्मस्थानमें जानेसे नहीं रोकना) (६) अनुचित कठोर दण्डो न दातव्यः (अनुचित कठिन दण्ड-(ताड़ना) नहीं देना) (७) जीवनपर्यंत निरापराधा न त्यजनीया (जीवनपर्यंत विना अपराध त्याग मत करना) इत्यादि]

इस प्रकार जंवाईने सासुका सम्बोधन करके उसे प्रणाम किया और अपनी पत्नीको लिवाकर ससुरालसे विदा हुआ। और देखते २ दम्पति दृष्टिसे अदृश्य हो गये। बिचारी माता वियोगाकुल हो, फिर फिर देखती हुई पीछे लौटी। ठीक है-"बेटी अरु गाय, जंह देवो तहँ जाय।"

माताकी शिक्षा।

बेटी ! जब सुसराले जाना, मत करना अपना मन माना।
करना जो सो सासु सिखावे, अथवा जेठी ननद बतावे ॥
जो हों घरमें जेठ जिठानी, करना उनही की मनमानी।
उनकी सेवा बन आवेगी, तो तू सुख संपत्ति पावेगी ॥
जेठी ननद सासु जेठानी, इन सबको तू समझ सयानी।
उनकी आज्ञा पालन करना, वधू-धर्म यह मनमें धरना ॥
जितने जेठे होवें घरपर, उन्हें समझना पिता बराबर।
उनकी आज्ञा सिरपर धरना. मानो है सुखसे घर भरना ॥
जो सुभाग्यसे हो देवरानी, करना प्रेम बहिन सम जानी।
उसको उत्तम काम सिखाना, अपने कुलकी चाल बताना ॥
देवरको लखना लघु भाई, आदर करना प्रेम जनाई।
उनके दुखमें दुःख मनाना, सुखमें मिल आनंद बढ़ाना ॥
जब तुम उनसे काम कराना, अपना बड़पन नहीं जताना ॥
प्रेम सहित धीरें मुसक्या कर. आज्ञा देना शील जताकर ॥
ऐसा करनेसे देवरानी, बात करेगी सब मनमानी।
देवर भी आज्ञा मानेंगें, तुमको गृहदेवी जानेंगे ॥
छोटी ननद बहिन है छोटी, उससे बात न करना खोटी।
प्रेम सहित उसको आदरना, द्वेष विरोध कभी नहीं करना ॥
यदि सुभाग्यवश तेरे घर पर, होवें कोई नोकर चाकर।
उन पर क्रोध कभी न जताना, कभी नहीं दुर्वचन सुनाना ॥
शांत भावसे आज्ञा देना, जो कुछ कहें उसे सुन लेना।

उनकी उचित प्रार्थना सुनकर, उचित होय सो करना गुनकर ॥
समय समझ कर डांट बताना, उनको मुंह नहीं कभी लगाना ।
उनके बच्चों पर सुदया कर, कभी कभी करना कुछ आदर ॥
उत्सव समय उन्हें कुछ देना, आशिषवचन उन्होंके लेना ।
उनके दुखमें दया दिखाना, यों उनको निज दास बनाना ॥
रखना चतुर दास अरु दासी, नेक चलन नीके बिश्वासी ।
लोभी रसिक मिजाजी तस्कर, ऐसे कभी न रखना नौकर ॥
ननद जिठानी देवरानीके, बच्चे लखना अपने ही से ।
स्वच्छ प्रेम उन पर नित करना, उत्तम शिक्षा यह मन धरना ॥
जाति बिरादरि घर मन भाये, मत जाना तुम बिना बुलाये ।
यदि बुलाय भेजें आदर कर, जाना हुकम बड़ोंका लेकर ॥
पुरा पड़ोस निवासी नारी, आये आदर करना भारी ।
जाते समय प्रेमसे कहना, "आया करो" कभी तो बहना ॥
आपसमें कर कलह लड़ाई मत करना उनकी कुबड़ाई ।
जो तू घरमें कलह करेगी, दुनियां मुझको नाम धरेगी ॥
इससे मैं तुझको सिखलाती, मत होना कुवुद्धिमें माती ।
काम वही करना दिन राती, जिसको सुन हो शीतल छाती ॥
गृहकारज निज हाथों करना, इसमें लाज न मनमें धरना ।
घर कपड़े बालक अरु भोजन, स्वच्छ रहें यह बड़ा प्रयोजन ॥
घरको लिपवाना पुतवाना, कपड़ोंको बहुधा धुलवाना ।
लड़कोंको अक्सर नहलाना, भोजन अपने हाथ बनाना ॥
इतने मुख्य काम नारीके, जो नारी करती है नीके ।
वह सबको प्यारी होती है, सब पर अधिकारी होती है ॥

बूढ़ा बारा अथवा कोई, बीमारीसे व्याकुल होई।
चित दे उसकी सेवा करना, दया धर्म यह मनमें धरना ॥
मत विचारना बुरा किसीका, तो तेरा भी होगा नीका।
परहितमें तू चित्त लगाना, फल पावेगी तब मनमाना ॥
बड़ी सीख यह उरमें धरना, सेवा पति चरणोंकी करना।
तेरे सुख उनके सुखसे हैं, तेरे उनसे प्राण लगे हैं ॥
पतिको भरसक राजी रखना, मनमें नाम उसीका जपना।
उनकी आज्ञा सिरपर धरना, रूखा उत्तर कभी न देना ॥
देव जिनेन्द्र दयामई धर्मा, गुरु निर्ग्रन्थ हरें दुष्कर्मा ॥
श्रद्धा भक्ति सदा इन करना चार दान दे पातक हरना ॥
कभी भूल मिथ्यात्व न सेवो ईर्षा द्वेष त्याग तुम देवो ॥
बेटी दोनों कुलकी लाजा जस रहे करो सो काजा ॥
नारि धर्मकी कुंजी है यह, सुख संपतिकी पूंजी है यह।
यह कर्तव जिससे बन आवे, सोई मनवांछित फल पावे ॥
यह सब बातें चितमें धरना इनकी अवहेला मत करना ॥
जो इनके अनुसार चलेगी सुखी रहेगी बहुत फलेगी ॥

यह शिक्षा न बिसारिये सुन बेटी चित धार।
तजो शोक जावो अबे, हर्ष सहित श्वसुरार ॥
या विधि शिक्षा मातने, दई सुताको सार।
कुलवंती या विधि चल, मूरख देय बिसार ॥
या से तन मन वचनसे पालो निज कुल धर्म।
'दीप' लहो यश या जनम, परभव पावो शर्म ॥

सुताहितैषी—

वर्णी दीपचन्द्र परवार, नरसिंहपुर-(C. P.) निवासी

स्वास्थ्य अथवा आरोग्यता।

(गृहस्थाश्रमरूपी महलकी नीव शारीरिक आरोग्यता और मानसिक शांततापर ही निर्भर है।)

इसी सम्बन्धमें पुत्रियोंको कुछ शिक्षायें

मेरी प्यारी बेटी और बहिनो ! क्या यह तुमको मालूम है ? कि व्याहके पश्चात् ससुरालमें जाकर (गृहस्थाश्रममें प्रवेश करने पर) तुमको अपने जीवनमें क्या क्या करना है ? तुम किन किन बातोंकी उत्तरदाता हो ? क्योंकि प्रायः आजकालकी बहुएं ससुरालमें पहुंचते ही सासु श्वसुर, देवर, जेठ, जिठानी, देवरानी, ननद तथा अपने पतिको भी अपना आज्ञाकारी बनाकर स्वच्छद प्रवर्तनकी चेष्टा करती हैं। वे सब· पर आज्ञा करना, मनोनुकूल अच्छा अच्छा खाना पहिरना, और सुखचैन उड़ाना ही अपना कर्तव्य व जीवनका सार समझती हैं। वे घरमें लड़ झगड़ कर वृद्ध सासु श्वसुर व अन्य कुटुम्बियोंमें फूट उत्पन्न कर अपने पति सहित अलग रहनेमें ही अपना भला समझती हैं। उनकी समझ है कि–जब हम अपने मा बापको छोड़ आई हैं तो पतिको क्यों उनके मा बापके साथ रहने दें ? इन सबकी सेवा कौन करे ? इत्यादि।

यहां तक कि कोई कोई तो अपने पतिको लेकर अपने पीहर (मा बापके घर) चली जाती हैं। परन्तु यह केवल उनकी भूल है, इससे उन्हें न तो सुख ही मिलता है और न यश ही मिलता है। किन्तु कायरताका पोटला सिर पर पड़कर अयश और दुःखका स्थान बन जाती हैं; इसलिये यदि तुम्हें अपने घरको स्वर्ग तुल्य बनाकर देवों सरीखे सुख भोगना और यश प्राप्त करना है तो माताके उपदेशको ध्यानमें रखकर नीचें लिखी कुछ शिक्षाओंपर ध्यान देवो और सच्ची गृहिणी बनकर गृहस्थाश्रम सफल करो और सुखी बनो।

(१) बेटियो और बहिनो! ज्योंही तुम ससुरालमें जाओ, त्योंही वहां अपने सब घरके लोगोंकी प्रकृति जान लो कि:-किसका स्वास्थ्य किस प्रकार ठीक रह सकता है। यही सबसे पहिली बात तुम्हारे लिये होगी। परन्तु ध्यान रहे कि केवल शारीरिक स्वास्थ्यसे ही आरोग्यता नहीं रहती है किन्तु उसका मनसे भी घनिष्ट सम्बंध है, अर्थात् बिना मनकी शांतिके शारीरिक आरोग्यता कदापि नहीं रह सकती है।

(२) आरोग्यता केवल औषधिसे, शुद्ध खानपानसे, स्वच्छ हवासे और प्रकाशादि व सुगंधित वस्त्रोंसे ही नहीं मिलती है किन्तु नीचे लिखी बातें भी बहुत आवश्यक हैं, जिन पर पूरा पूरा ध्यान रखना चाहिए। इन सबमें अधिक महत्वकी और अत्यावश्यक बात यह है कि "मनकी शांति रखना" इसीमें सब बातें समाई हैं इसी लिये इसी सम्बन्धमें कुछ थोड़ीसी बातें नीचे लिखी जाती हैं—

(क) अपने घरमें किसीसे कभी ऊंचे स्वरसे, क्रोधसे, मानसे, व कटाक्ष करते हुए कपटभरे, कठिन व कडुवे वचन नहीं बोलना ।

(ख) यदि तुमको कोई कटुक वचन क्रोध व मानके वश होकर कहे भी तो तुम उन्हें शांतितासे सुनकर अनसुने कर देवो ! क्योंकि अग्निके बुझानेके लिये पानी ही डाला जाता है न कि इंधन, इसलिये तुम भी उस क्रोधरूपी अग्निमें क्षमा, शांति व सहनशीलता रूपी पानी डालकर बुझा दो और नम्र (मिष्ट) वचनरूपी वायुमें उड़ा दो । क्योंकि वह क्रोधाग्नि उत्तरमें कटुक वचन कहने, तथा क्रोध व रिस करनेसे और भी धधकती है । यहांतक कि वह कभी कभी घरका घर जला डालती है । यह बड़ा भारी आरोग्यताका घातक है :

(ग) बहिनो ! वशीकरणका नाम तुमने सुना होगा और तुम्हारे मुंहमें इस नामसे पानी भर आया होगा । लोग प्रायः कहने लगते हैं कि न मालूम इस बहूने क्या जादू कर रक्खा है कि सासु, ससुर, जेठ, देवर, पति, ननद, सासरे मात्रके सभी इसका कहना मानते हैं। यह जितना पानी पिलाती है, सब उतना ही पानी पीते हैं इत्यादि, परन्तु वह वशीकरण मंत्र सिवाय मिष्ट भाषणके कुछ नहीं है । कहा है—

" सबके मन हर लेत हैं, तुलसी मीठे बोल ।
यही मंत्र इक जानिये, वशीकरण अनमोल ॥
कागा किसको धन हरे, कोयल काको देत ।
केवल मीठे वचनसे, जग अपनो कर लेत ॥

(घ) बहिनो ! तुम साक्षात् प्रेमकी मूर्तियां हो, इस लिये तुम सर्वदा प्रसन्न चित्त रहो ताकि सब लोग तुमसे प्रसन्न रहें। स्मरण रखो सांठा बोओगी तो मीठा और नीम लगाओगी तो कडुवा रस पाओगी। बबूल बोनेसे कांटे ही फलते हैं। दर्पणमें जैसा मुंह करके देखो वैसा ही प्रतिबिंब दृष्टि पड़ेगा। तात्पर्य यदि तुम प्रसन्न रहोगी तो सब प्रसन्न रहेंगे।

(ङ) बेटियो ! अदेखाई व ईर्षाभाव सर्वथा और सदैव आरोग्यताके घातक हैं। जिस घरमें इसका प्रवेश हुआ, कि फिर उसे शत्रुकी आवश्यक्ता नहीं रहती है. व परस्पर एक दूसरेको देखकर जलती झुलसती रहती हैं और इसी प्रकार बीमार होकर प्राणोंसे हाथ धो बेठती हैं। इस लिये कभी भी अदेखाई नहीं करके, परोदय देखकर प्रसन्न होना चाहिए।

(३) बहिनो ! इस प्रकार प्रेम और सरल स्वभावसे तुम सबके साथ वर्ताव करोगी तो तुम्हारे मनकी शांतिके साथ २ तुम्हारे शरीरकी निरोगता भी रहेगी, तुम अनेक रोगोंसे बची रहोगी, झगड़े टंटेसे ही रोग उत्पन्न होता है, और फिर जीवन विषके समान दुःखरूप हो जाता है।

(४) मनकी शांति अर्थात् आरोग्यताके लिये मुझे कई बातें कहना है उनमेंसे प्रथम स्वच्छता व सुघड़ता है। जितनी शोभा वस्त्रालंकारोंसे नहीं होती उतनी स्वच्छता व सुघड़तासे होती है। इतना ही नहीं, किन्तु वह अनेक रोगोंसे भी बचाती है।

(५) तुम अपना शरीर, अपने कपड़े, अपना घर तथा घरकी सम्पूर्ण वस्तुएं जैसे बासन वगैरह नित्य स्वच्छ रक्खो।

बैठक व रसोईघर आदि स्थान नित्य स्वच्छ रखना, रसोईघरको चौका भी कहते हैं सो इसमें द्रव्य (भोजन सामग्री) क्षेत्र (स्थान) काल (समय) और अपने भाव इन चार बातोंकी शुद्धि होना आवश्यक है, तभी वह चौका कहा जासक्ता है। पहिरनेके व हाथ मुंह पोंछनेके कपड़े जैसे रुमाल, अंगोछे, गंजीफिराक, धोती आदि नित्य धोकर स्वच्छ रखना। इसके सिवाय अन्य कपड़े चादर, कोट, कुरते आदि जो मैले होगये हों, उनको धोबीके पास धुला लेना, अथवा स्वयं धो लेना बच्चोंको रोज नहलाना, और उन्हें धोये हुए स्वच्छ कपड़े पहिराना चाहिए।

(६ घरका आंगन, मंजोटा, घिनौंचीं, पनाला और हौज आदि अपने सामने व आप ही स्वयं साफ करना, क्योंकि इनसे बदबू फैलकर हवाको बिगाड़ देती है, जिससे बीमारी फैल जाती है जिस प्रकार कि दस्त न आनेसे, पेट साफ न होकर बेचैनी हो जाती, और स्वास्थ्य विगड़ जाता है। उसी प्रकार घर भी साफ न होनेसे बिगड़ जाता है।

(७) घरमें खाने पीनेकी वस्तुएँ अपने आप नित्य शुद्ध (संशोधन) करना, यह तुम्हारा मुख्य कार्य है, क्योंकि बाजारसे जो सामान आता है, उसमें प्रायः धूल, मिट्टी, कंकर, भूसी, मूसाकी लेंडी तथा और भी ऐसी ही बहुतसी हानिकारक अपवित्र वस्तुएँ मिली रहती हैं। अथवा घरमें रखा हुआ अनाज आदि घुन जाता है उसमें लट, कुंथुवादि जीव पैदा होजाते हैं। कीड़ी मकोड़ियां चढ़ जाती हैं। ऐसी दशामें विना शोधे, बीने, दलने, पीसने, कूटने, रांधने व खानेसे तुरत रोग उत्पन्न

होजाता है। इसलिये जहांतक हो सके, बाजारू चीजें बिना धोये सुखाये काममें मत लाओ।

(८) रसोई तैयार करनेमें भी स्वच्छताकी आवश्यकता है। रसोई बनाने व खानेके वर्तन बिलकुल साफ मांजना चाहिए क्योंकि उनमें थोडी भी जूंठन रह जानेसे वहुतसे जीव उत्पन्न हो जाते हैं। और फिर वे जन्तु भोजनके साथ खानेवालोंके पेटमें जाते हैं, जिससे अनेक रोग उत्पन्न हो जाते हैं। उच्च जातिके लोगोंमें जहां खानपान व चौका आदिकी सुघड़ता व स्वच्छता होती है, वहां बीमारी भी कम होती है।

(९) पकाया हुआ अनाज बहुत जल्दी बिगड़ने लगता है, इसलिये बासी भोजन नहीं रखना, न किसीको खिलाना। नरम वस्तुएँ कि जिनमें पानीका भाग अधिक होता है, जल्दी चालितरस हो जाती हैं, इस लिये ऐसी वस्तुएं तुरंत तैयार करके खाना व खिलाना चाहिए। तैयार किए हुए भोजनके पदार्थ कभी उघाड़े नहीं रहने देना चाहिए, क्योंकि मक्खी आदि जीव अपने मुंह व पांखोंद्वारा अनेक अपवित्र और विषैले पदार्थ लाकर भोजनमें छोड़ देते हैं। चौकेमें सफाई रखनेसे मक्खियां वहां नहीं आवेंगी। इस प्रकारसे प्रबन्ध रक्खो।

(१०) रसोई करना यह तुम्हारा मुख्य काम है, इसलिये इस काममें किसी प्रकार आलस्य न करके अच्छे प्रेम और उत्साहके साथ कि जिससे तुम्हारे भोजनकी प्रशंसा होवे, किया करो। ऐसी रसोई बहुत स्वादिष्ट और हितकारी होती है।

(११) किसीको जिमाते हुए भोजन बड़े प्रेम और शुद्ध

भावसे, "कि यह भोजन सबको हितकारी हो" परोसना, क्योंकि बिना मनसे व कुभावोंसे परोसा हुआ भोजन खानेवालेको विषका काम करता है। तात्पर्य—परोसनेके समय जैसा भाव माता पुत्रके प्रति रखती है, ऐसा रखना चाहिए।

(१२) भोजन तैयार करनेके सम्बन्धमें एक आवश्यक बात यह भी है कि पुरुषोंका भोजनाधार प्रायः स्त्रियां ही होती हैं। वे उन्हें जैसा पवित्र, अपवित्र, स्वादिष्ट, षट्रसी, नीरस, चटपटा या सादा भोजन बनाकर खिलावें वैसा ही उन्हें खाना पड़ता है, और कभी कभी प्रकृति विरुद्ध कच्चा, चटपटा, व निरुत्साहसे बनाया हुआ भोजन हानि भी पहुंचा देता है। इसलिये सदैव ऋतु, उद्यम, प्रकृति, देश और रुचिके अनुसार फेरफार करते हुए, सादा भोजन बनाना चाहिये कि जिससे शरीर आरोग्य रहे, मनपर किसी प्रकारका बुरा प्रभाव नहीं पड़ने पावे और कभी क्लेश उठानेका अवसर न आवे। मनके ऊपर भी भोजनका बहुत प्रभाव पड़ता है।

(१३) अधिक खारा, खट्टा, चरपरा व मीठा भोजन छोटे बड़े सबकी आरोग्यताको हानिकारक है। वह पाचनशक्तिको बिगाड़ता, लोहूको तपाता, आंतोंके रसोंको बिगाड़ता और बहुतसे चर्मरोगोंको उत्पन्न कर देता है। ऐसे भोजनसे खट्टी डकार, हिचकी, पेटमें पवनका रुकना और मरोड़ आना, शरीर वा गलेमें खुजली आना, दस्त व पेशाबके स्थानमें वा पेटमें जलनका होना, बवासीर होजाना, पेटमें कृमि पड़ जाना, शरीरमें पीलापनका होना, अरुचि रहना इत्यादि—ये सब रोग तुम्हारी पाकशा-

लामेंसे ही निकलते हैं। इसलिये सादा और प्रकृति अनुसार स्वादिष्ट भोजन बनाना चाहिए।

(१४) प्रायः लोगोंमें बलात्कार खींचतान करके अधिक भोजन खिलानेकी कुचाल पड़ रही है। इससे हितके बदले वह अन्न सन्न (अजीर्ण आदि बीमारी) उत्पन्न करके उल्टा अहित कर देता है। इसलिये अधिक खींचतान किये विना, इच्छा प्रमाण भोजन करना व कराना उचित है, परन्तु जैसे खींचतान नहीं करना वैसे भूखा भी नहीं रखना चाहिए, क्योंकि बहुतसे लोग संकोचवश भूखे भी रह जाते हैं, इस लिये उनसे अवश्य वारंवार पूछना चाहिए, और जिनकी प्रकृति व भोजनका अंदाज तुम्हें मालूम हो, उनको आग्रह न करके विचारके साथ ही परोसना चाहिए।

(१५) बहिनो ! तुम घरका भूषण और अन्नपूर्णा हो, तुम्हारे सिवाय कोई लकड़ी, पत्थर, धातु व मिट्टीकी मूर्तिका नाम अन्नपूर्णा लक्ष्मी, गृहदेवी या कुलदेवी नहीं है। तुम्हारे हाथमें पुरुषोंकी जीवन डोरी है इसलिये तुम सच्ची गृहिणी बनो; स्वयं उत्तम मार्गका अवलम्बन करती हुई रानी चेलना आदिके समान अपने पति व अन्य पुरुषोंको भी सन्मार्गी बनाओ यही तुम्हारा मुख्य कर्तव्य है।

(१६) घरमें यदि कर्मवश कोई बीमार पड़ जावे, तो तुम तुरंत होशियार व प्रेम, दया और उत्साहसे उसकी सारटहल करनेमें लग जाओ। यह काम प्रायः हर जगह दवाखानों (हास्पिटल—औषधालय) में परिचारिका (नर्स) ही करती हैं,

कारण पुरुषोंसे स्त्रियोंका स्वभाव सहज ही नम्र व दयालु होता है, इसलिये घरमें तुम्हीं परिचारिका हो। तुम्हें इस काममें निपुण होना चाहिए और इस विषयकी पुस्तकें पढ़कर तत्सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त करना, तुम्हारा कर्तव्य है, क्योंकि यह काम जैसा आवश्यक है वैसा ही जोखमभरा और जवाबदारीका है। तुम रोगीसेवाका पाठ मैनासुन्दरीसे सीखो। देखो, उसने अपने कोढ़ी पति राजा श्रीपालकी कैसी सेवा की थी! जिसके प्रभावसे उसका पति कामदेव समान निरोग और रूपवान हो गया था।

(१७) बीमारीके समय बहुत नरनारी व्यर्थ ही भ्रमोत्पादक बातें कल्पना करके बीमारकी दवा आदि उपचार नहीं करते और धूर्तों (ठगों)के फंदेमें फंसकर झाड़-फूंक (मंत्र जंत्र) कराते हैं। इसी प्रकार बीमारका हाथसे खो बैठते हैं। इसलिये तुम कभी ऐसे भोले लोगोंके बहकानेमें न लगो। और न कभी पाखंडियोंमें द्रव्य गुमाओ, किन्तु सदा अपने व आसपासवालोंके घरोंकी रक्षा करना तुम अपना कर्तव्य समझो।

(१८) घरमें कोई बीमार हो तो बारीकीसे उस बीमारीकी जड़ ढूंढ़ निकालो। प्रायः खराब हवा, अधिक शीत, अधिक उष्णता, खराब पानी, प्रकृति विरुद्ध अपवित्र या कच्चा भोजन, मर्यादा रहित भोजन, अधिक भोजन, कुसमय व रात्रिभोजन, ये सब रोग उत्पन्न होनेके कारण हैं, इसलिये इस ओर ध्यान रक्खो।

(१९) हवा, पानी उजेला और पथ्य योग्य होनेसे ही औषधि काम देती है। अन्यथा कुसंयोगसे कभी कभी अमृत

तुल्य औषधि भी विषका काम कर जाती है; इसलिये उक्त चारों बातों पर विशेष ध्यान देना चाहिए। इसके अतिरिक्त एक बात और ध्यानमें रखनेकी यह है कि तुम्हें रोगीका विश्वास करके उसके पास खानेपीनेकी कोई वस्तु कभी न रखना चाहिए क्योंकि वह न मालूम कब क्या उठाकर खा ले और रोग बढ़ जाय, क्योंकि रोगीका चित्त डांवाडोल रहता है, इससे कभी कभी वह घबराकर जानबूझके भी कुपथ्य कर बैठता है, इसलिये उसकी बहुत चौकसी रखनी चाहिए।

(२०) बीमारके कमरेमें मन प्रसन्न करनेवाली अच्छी २ तसबीरें उसके सामने लटकाना चाहिये, जिससे उसका चित्त उनमें लगा रहे। और वह रोगपर पुनः पुनः विचार न करने पावे, क्योंकि निरंतर रोगका विचार करते रहनेसे कभी कभी रोगीका साहस घट जाता है, दवासे विश्वास उठ जाता है और वह रोगको असाध्य मानकर निरंतर चिंता चितामें भस्म होकर फिर कभी स्वास्थ्य लाभ नहीं कर सकता है।

(२१) रोगीके पास बैठकर कभी कोई कायरता भय व शोकोत्पादक बात नहीं करना चाहिये, न उससे कभी यह कहना चाहिये, कि तुम्हारा रोग असाध्य है, किन्तु सदैव उसे मधुर वचनों द्वारा संतोष और साहस बंधाते रहना चाहिए, क्योंकि ऐसा न करनेसे कभी कभी रोगी घबराकर प्राण छोड़ देता है। इसलिये सदैव दिल बहलानेवाली उत्तम पुरुषोंकी कथाएँ, तथा धार्मिक उपदेश, तत्वचर्चा, वैराग्य भावना, ईश्वरके गुणानुवाद, कर्मों और जीवका स्वरूप और उनसे उसके छूट-

नेका उपाय इत्यादिकी चर्चा करते रहना चाहिये ताकि रोगीका लक्ष्य रोगकी ओर जावे ही नहीं। वेदना हटानेका यह बड़ा भारी उपाय है।

(२२) सवेरे उठकर घरके सब किवाड़ खोलकर प्रत्येक स्थानमें नवीन हवा और सूर्यका प्रकाश पहुंचाना चाहिये, क्योंकि जिस घरमें हवा और प्रकाश बराबर नहीं पहुंचाया जाता है उस घरमें रहनेवाले और अधिकतर स्त्रियां प्रायः पीली पड़ जातीं, हैं और सदैव रोगसे पीड़ित बनी रहकर वैसी ही निर्बल सन्तान उत्पन्न करती हैं, तथा उस घरको भूतप्रेतादिसे दूषित बतलाने लगती हैं। परन्तु यह सब भूल है, इसलिये हवा और प्रकाश सब मकानमें पहुंचाना अत्यावश्यक है। रात्रिको ऊपर भागमें रहनेवाली, जालीदार खिड़कियां हवाके लिये सदैव खुली रखना चाहिये ताकि सदैव स्वच्छ हवा आती जाती रहे और पक्षी तथा चोर आदिका भी भय न रहे।

(२३) कभी कभी घरकी व आसपास वस्तीकी हवा बिगड़ जानेपर घर व वस्ती कुछ समयके लिये छोड़ देना चाहिये, अथवा हवा शुद्ध करनेवाले सुगंधित पदार्थोंसे हवनकर पवन-शुद्धि करना चाहिये।

(२४) जिस प्रकार हवा आवश्यक है उसी प्रकार पानीका भी ध्यान रखना चाहिये। पानी उत्तम जलाशयसे जहां मैला आदि वस्तुएं न पड़ती हों, वहांसे मोटे कपड़ेके दो पुर्तकर उससे छानकर लाना चाहिये और जीवानी उसी जलाशयमें

पहुंचाना चाहिये। पानीके वर्तन भूमिसे कुछ ऊँचाई पर रखना चाहिये। पानीमें जूठे बासन नहीं डूबाना चाहिये। पानीके वर्तन सदैव अन्दरसे खूब खरोंचकर मांजना व धोना चाहिये। यदि पानीमें कुछ वास (गंध) आती हो या कुछ रंगत दिखाई दे, तो उसे आगपर गरम कर फिर ठंडा करके काममें लाना चाहिये। पीनेके समान नहाने धोनेके लिये भी शुद्ध छना हुआ पानी आवश्यक है। मैले कुचैले हाथों व अपवित्र शरीरसे पानी नहीं लेना चाहिए और पानी छाननेका छन्ना मैला व फटा हुआ नहीं रखना चाहिये।

(२५) अधिक सोना, दिनको सोना व नियमानुसार न सोना, सवेरे सूर्योदयके पीछे बहुत समय तक सोते रहना और रात्रिको विशेष जागना भी स्वास्थ्यको हानिकारक है।

(२६) निकम्मे बैठे रहनेसे भी शरीरमें प्रमाद उत्पन्न होकर अनेक रोग उत्पन्न होजाते हैं। इसलिये मानसिक वा शारीरिक उभय प्रकारके रोगोंसे बचनेके लिये कभी भी निरुद्यमी नहीं रहना चाहिये। आजकल बहुतसे पुरुष अपनी स्त्रियोंसे घरका काम (कूटना, पीसना, झाड़ना, बटोरना, रोटी बनाना, बच्चोंको सम्हालना इत्यादि) न कराकर उन्हें पुरुषोंके समान टेनिस, किरकिट, हाकी आदि खेल खिलाकर व्यायाम कराना चाहते हैं, परन्तु यह उनकी भूल है। इससे घरका काम ठीक न होकर, बच्चोंकी सम्हाल भी ठीक नहीं होती, घरका खर्च बढ़ जाता और छोटे छोटे कामोंके लिये भी पराधीन हो जाना पड़ता है। इसके सिवाय स्त्रियोंकी लज्जा भी नष्ट होजाती है।

इसलिये घरके कामोंसे निवृत्त होनेके बाद शिक्षाप्रद धार्मिक व नैतिक पुस्तकोंका स्वाध्याय करना चाहिए व बच्चोंको बहलाते हुए शिक्षा देनी चाहिये, ईश्वरका भजन करना चाहिये अथवा रहंटिया चलाकर सूत कातना, कपड़े सीना बुनना आदि कला कौशल्य सम्बन्धी शिक्षा लेना चाहिये और यदि अवकाश हो तो कभी कभी अपनी सासु आदि गुरानियोंके साथ बाहर खुली हवामें भी जाना चाहिये, परन्तु तो भी घरू कामोंको अपने आप करनेकी अपेक्षा और कोई भी उत्तम व्यायाम नहीं हो सक्ता है।

(१७) बहिनो और बेटियो! मरा यह सब कहनेका तात्पर्य यह है कि आरोग्यता प्राप्त करनेके लिये सबसे प्रधान कारण चित्तकी प्रसन्नता है, इसलिये वे कारण जिनसे अपना व परका चित्त प्रसन्न रहे, यथासंभव मिलाते रहना चाहिये।

(१८) स्त्रियोंका ऋतु (मासिक) धर्म पालन करना अत्यावश्यक है। प्रायः बहुतसा स्त्रियां इन दिनोंमें घरक सब कामकाज करती हैं, सिवाय रोटी पकानेके कूटना पीसना, पानी भरना, कपड़े धोना, झाड़ना, लीपना, बासन मांजना यहां तक कि किसिके घर निमंत्रणमें जीमने जाना, गाना बजाना, अंजन मंजन आदि शृंगार भी करती हैं। ऐसा करना सर्वथा वर्जित है, इससे सन्तान पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। देखो ना बरी, पापड़ आदि अचेतन पदार्थोंकी इनकी दृष्टिमात्रसे क्या दशा हो जाती है?

इसलिये इनको इन दिनोंमें उक्त सब कामोंसे बंचित ही रहना चाहिये। अर्थात् ४ दिन तक एकान्त स्थान (किसी हवादार कोठरी) में ही बिताना चाहिये, और अपने भोजनके

वर्तन व ओढने बिछानेके कपड़े बिल्कुल अलग रखना चाहिए। पश्चात् पांचवें दिन स्नान करके घरका काम करना उचित है। जिस घरमें रजोधर्मकी क्रिया बराबर नहीं पलती है, उस घरमें व्रती श्रावक व मुनि आदि सत्पात्रोंके आहारकी विधि नहीं बन सक्ती है। इस विषयमें अन्य श्रावकाचार व वैद्यकके ग्रन्थोंमें बहुत विचार किया गया है, वहांसे देखना चाहिये। यह वात स्वास्थ्यके लिये भी बहुत आवश्यक है।

(२९) गर्भवती स्त्रियोंको उपवासादि व्रत नहीं करना चाहिये और न मनमाने खट्टे, चटपटे, कडुवे आदि पदार्थ खाना चाहिये। क्रोध, आलस्य, विकथा, कलह, मिथ्याभाषण, चोरी, कपट, मैथुन आदि निंद्य कार्य नहीं करना चाहिये। इससे गर्भस्थ बालकको बहुत कष्ट पहुंचता और बुरा प्रभाव पड़ता है तथा अंगहीन व रोगी दुःस्वभाववाली सन्तान होती है।

(३०) ऋतुकालमें गर्भाधान होनेसे भी संतान विकल अंग व दुःस्वभाववाली असदाचारी होती है अतएव कमसे कम ९ दिन अवश्य ही बचा देना चाहिये।

(३१) प्रायः बहुतसी स्त्रियां जब कभी घरसे बाहर कहीं जमिन आदिके लिये अथवा मेले ठेलेमें जाती हैं तो बहुतसे वस्त्राभूषणोंसे सुसज्जित होकर (यदि घरमें न हो तो मांगकर भी पहिन) जाती हैं जो उचित नहीं है, परन्तु जब वे घर आती हैं तो अपने पतिके सन्मुख मैले कुचैले कपड़े पहिन कर आभूषण रहित नंग धड़ंग (डाकिनसी बनकर) आती हैं।

इससे ही उनके पति उनसे घृणा करने लगते हैं। इसलिये स्त्रियोंका मुख्य कर्तव्य है कि जब वे कहीं बाहर जावें, तब साधारण वस्त्राभूषण पहिन कर जावें, और जब पतिदेवके सन्मुख आवे (यदि पति घर ही तो रात्रि समय) तो संपूर्ण शृंगार करके ही आवें, जिससे आराध्य पतिका चित्त उन्हींके पास बंध जावे और अन्यत्र न जाने पावे। शृंगार वास्तवमें पतिहीके लिये होता है, न कि औरोंको दिखानेके लिये।

(३२) यदि पति विदेशमें हो, तो भी स्त्रियोंको शृंगार नहीं करना चाहिये और सादे भोजन व वस्त्र ग्रहण करना चाहिये। तथा घरसे बाहर अत्यन्त आवश्यकता होने पर भी बिना किसी विश्वस्त गुरुजनको साथ लिये कदापि न जाना चाहिये।

(३३) अज्ञानतावश बहुतसी पुत्रियां अपने गुरुजनों (माता पिता, मामा, बड़ा भाई, काका, बड़ी भाभी, मासी, फूवा, फूफा, काकी आदि) से अपने पैर पुजवाती हैं यह उनकी बड़ी भूल है इसलिये इन्हें चाहिये कि ये अपने गुरुजनों चाहे वे पितापक्षके होवें चाहे श्वसुर (पति) पक्षके हों, सबके स्वयं पांव पूजें (पावां ढोक करें)।

(३४) अन्तिम निवेदन यही है कि गृहस्थाश्रम एक बड़ा भारी वृक्ष है। इसलिये इसकी छायामें आनेवाले व इसका आश्रय लेनेवाले सब जीवोंका यह हितकारी व मनोवांछित फलदाता होना चाहिये। तात्पर्य यह कि परोपकार, दान, अति-

थिसेवा, देवार्चन, पठनपाठनादि कार्योंसे गृहस्थोंकी शोभा होती है जैसा कि निम्नलिखित श्लोकसे विदित होता है इसलिये उसपर ध्यान देना चाहिये—

> सानंदं सदनं सुतास्तु सुधियः कान्ताऽमृतंभाषिणी ।
> इच्छा ज्ञानघनं स्वयोषिति रतिः स्वाज्ञापराः सेवका ॥
> आतिथ्यं जिनपूजनं प्रतिदिनं मिष्टान्नपानं गृहे ।
> साधोः संगमुपासते हि सततं धन्यो गृहस्थाश्रमः ॥

अर्थात्—जिस घरमें नित्य आनन्दका वास हो (सब प्रसन्नचित्त हो), पुत्र बुद्धिमान हों, स्त्री मिष्टभाषिणी हो, ज्ञान ही जहां धन हो, पुरुष अपनी स्त्रीपर प्रेम करनेवाला हो, सेवक आज्ञाकारी हो, जहां अतिथियोंका सत्कार (दान) होता हो, जिसमें जिन भगवानका पूजन होता हो, जहां मिष्टान्न स्वादिष्ट शुद्ध) भोजन बनता हो और जहां साधुओंका समागम रहता हो, वह घर (गृहस्थाश्रम) धन्य है ।

प्रिय बन्धुओं और बहिनों तथा बेटियों ! कहां हैं आज वे माताएं जो अपनी बेटियोंको उक्त प्रकार शिक्षण देती थीं ? हाय ! आज इस आर्यावर्तमें द्विज वर्णोंमें भी ऐसी महिलारत्नोंका एक प्रकारसे अभाव सा ही देखनेमें आता है । कहां गई सीता, द्रोपदी, अंजना, मैना व मनोरमा ? हाय भारतभूमि ! आज तू ऐसी सतियों व रामचन्द्र, हरिश्चन्द्र, विक्रम जैसे नररत्नों व उमास्वामी समंतभद्र अकलंक आदि धर्मप्रचारकोंको खोकर गारत हो रही है ।

हे भारतीय सभ्य नरनारियों ! जागो जागो ! देखो, एक पाहियेसे रथ नहीं चलेगा । इसलिये स्थान स्थानपर पुत्र और पुत्रियोंकी पाठशालाएं खोलो, आश्रम खोलो, रीति नीति व सद्धर्म प्रचारकी शिक्षा घरोंघरमें प्रचार करो, ताकि ऐहिक सुखोंकी प्राप्ति हो और पारलौकिक सुखोंके निकट भी पहुंच जाओ । इस समय हमको पुरुषोंमें जैसे सदाचार व्यापार आदिकी शिक्षा देना अभीष्ट है, उसी प्रकार स्त्रियोंमें भी कुल व्यवहार गृहस्थाश्रम सम्बन्धी सब प्रकारकी शिक्षा देना आवश्यक है । उन्नति या अवनतिका एक प्रधान कारण स्त्रियोंको भी समझना चाहिये । इत्यलम् ।

आगण वदि तिथि जार्गणा, संवत् वीर अर्हंत ।
तीर्थंकर हत गतिनको, लोक शिखर तिष्ठंत ॥

समाज हितैषी—

वर्णी दीपचन्द्र परवार (नरसिंहपुर C. P.) निवासी
अनुवादक तथा परिवर्द्धक।